An epitome of universal love and brotherhood

मुल्क हिन्दुस्तान जो हिमालय की बर्फ पोशवादियों से लेकर बंगाल के सहराई तक फैला हुआ है। इस मुल्क के सूबा उत्तर–प्रदेश जिसकी वहिश्त भारत में धड़कते हुए दिल की तरह है। इसके मशरकी पूरबी किनारे जिला अम्बेडकर नगर के किछौछा मुकद्दिसा में आप मजार शरीफ और आस्ताना है, जहॉ भारत के कोने–कोने से लेकर विश्व के कई देशों से परेशान हाल लोगों–दुखियारों के आने और मन्नते पूरी होने के बाद खुशी के ऑसू बहाते हुए यहॉ से विदा होने का सिलसिला बदस्तूर जारी है।

हजरत मखदूम अशरफ समनान के आदिल खुदा तुर्स और फकीर दोस्त हुक्सरा सै0 मोहम्मद इब्राहिम नूर बख्सी रह. अलैह के साहब जादे, हजरते खुदैजा के ऑखो के तारे और इब्राहिम दरवेज के पेशीनगोइयों का जगमगाता हुआ एक नायाब आइना है।इसमें कोई शक नही कि यह आस्ताना सिसकती, बिलखती हुई लाखों जिन्दगियों को फैज (लाभ) पहुॅचाता है। इसलिए हिन्दुस्तान मे ही नही बल्कि पूरी दुनिया में किछौछा दरगाह शरीफ को रूहानी (आध्यात्मिक) इलाज का मरकज (केन्द्र) भी कहा जाता है।

'' ऐ अशरफे समना हो तुम फरजिन्दे शेरे किबरिया,
जो दो बाजू से तेरे जाहिर है शान–ए–मुर्तजा ''

कुदवतुल कुवरा जुवदतुल उरफा हजरत महबूबे यजदानी तारिकुस्सलतनत अमीर कवीर हजरत मखदूम सुल्तान सै0 शाह ओहदुद्दीन अशरफ जहॉगीर समनानी नूर बख्सी रह अलैह का संक्षिप्त परिचय–

कुतबुल कुबरा,महबूबे यजदानी, मुहाफिजे दुनिया, नाजिर आलमे मलकूत, गौसुल आलम, हजरत मखदूम सै0 अशरफ जहॉगीर सिमनानी आपके वालिद (पिता) सुल्तान इब्राहिम सिमनानी ईरान (सिमनान) के बादशाह थे आप सूफी मंश बादशाह थे। जोहदो तकवा इबादत व रियाजत में कामिल थे। बेटे की आरजू थी कि एक रात में रसूले अकरम सल्लाहोअलैहे वसल्लम का दीदार हुआ। रसूल ने आपको दो फरजन्दों (पुत्रों) की वशारत दी और कहा कि एक का नाम मोहम्मद अशरफ और दूसरे का आरफ रखना बाद इस ख्वाब के आप 708 हिजरी में पैदा हुए और अशरफ जहॉगीर सिमनानी के नाम से मशहूर हुए।

तालीम व तरबियत :– जब आप चार साल चार महीना चार दिन के हुए तो हजरत इमामुद्दीन ने रस्मे विसमिल्लाह कराई एक साल मे ही आप हाफिजे कुरान मय किराते सबा हुए आपने मशहूर जमाना कारी अली बिन हमजा कूफी से सनद् किरात हासिल की चौदह साल की उम्र में सभी इल्म व फन से मालामाल हो गये और पूरे ईरान व ईराक मे मशहूर हो गये।

तख्त नशीनी व तर्क सल्तनत :– आपके वालिद के विसाल (मृत्यु) के बाद 723 हिजरी में कम उम्री में सल्तनत सिमनान के तख्त पर बैठे आपके दौरे में हुकूमत इल्म व फन को खूब बढ़ावा मिला और सिमनान को एक अहम मुकाम हासिल हुआ आपने अपने

दौर में अदल व इन्साफ का दरिया बहा दिया। चूँकि आपको बचपन से ही उलेमा (धर्म गुरू) का साथ बहुत पसन्द था। दौरे सल्तनत मे ही आपको हजरते खिज्र अलैहिस्सलाम की जियारत हुई दो साल तक उनकी दी हुई तालीम और अजकारे उवैसिया पर अमल किया। 27 रमजान 733 हिजरी की रात मे हजरते खिज्र ने सल्तनत छोड़ने का अल्लाह की तरफ से हुक्म फरमाया आपने अपनी वालदा (माता) से इजाजत लेकर शाही रोब व दबदबा के साथ सिमनान से बाहर निकल पड़े और अपना ताजोतख्त छोटे भाई को सौंप दिया।

हिन्दुस्तान में आमद :–

दुश्वार रास्तों पथरीली चट्टानों का पार करते हुए शाही लश्कर को सिमनान में ही छोड़ते हुए तलाशे हक में तनहा ओछ (मुल्तान) पहुंचे। इसी बीच में हजरते खिज्र ने 70 बार आपके पीर (धर्म गुरू) शेख अलाउहक पंडवी को बशारत दी कि बुलन्द मरतबा शहबाजे विलायत सिमनान मे चला है। तमाम मशायख अपने – अपने दामन फैलाये हुए हैं लेकिन मैं उसको तुम्हारे लिए ला रहा हूँ। ओछ में आपने शेख जलालुद्दीन मखदूम जहॉगश्त व दूसरे आरफीन से मुलाकात की उनसे मिलते हुए दिल्ली पहुँचे। यहॉ उस वक्त हिन्दुतान में तख्त पर फिरोज शाह तुगलक मौजूद था।

वैअत व खिलाफत (मुरीद होना) :– मखदूम अशरफ दिल्ली से बिहार शरीफ आये और वहॉ मखदूम शेख शरफुद्दीन यहिया मनेरी की नमाजे जनाजा पढ़ाई और जो कुछ तबर्रूकात (गुदड़ी) खिरका आदि जो कुछ उनसे मिला था। उसे लेते हुए पण्डवा शरीफ पहुंचे और हजरत अला उलहक पंडवी असद खालिदी के दस्तेहक पर वैयत व खिलाफत हासिल की और उनसे मुरीद हो गये। अलाउलहक ने बड़ी मोहब्बत से मखदूम अशरफ का स्वागत किया और वह सवारी जो उन्हें अखी सेराज आईनये हिन्द से मिली थी, भेंट किया। आप लगभग 8 साल पंडवा में रहे और आपके पीर ने जहॉगीर की उपाधि से आपको नवाजा।

जानशीनी (उत्तराधिकारी) की बशारत :–

एक दिन आप पीर की सेवा के लिए तैयार हो रहे थे। आपके पीर उधर से गुजरे और पूछा सैय्यद किस काम में लगे हुए हो आपने जबाब दिया पीर की सेवा के लिए कमर कस रहा हूँ। आपके पीर ने जबाब दिया कि इस तरह कसना कि बीच मे कुछ बाकी न रहे। उसके बाद आपके पीर ने फरजन्द मानवी (दत्तक पुत्र) की खुशखबरी सुनायी और कुदवतुल आफाक हजरत अर्ब्दुरज्जाक नुरूलऐन आपके जानशीन हुए और उनसे एक बड़ा खानदान वजूद मे आया। जिसको हिन्दुस्तान व बाहर के इलाकों में खानदाने अशरफिया के नाम से जाना जाता है।

सफर :– पंडवा शरीफ से हुजूर मखदूम अशरफ ने पूरी दुनिया की सैर का प्रोग्राम बनाया और एक लम्बे अर्से तक पूर्वी शहरों और इस्लामी मुल्कों की सैर की जरीरतुल अरब के अलावा मिस्र, रोम शाम, ईराक और तुर्किस्तान के तमाम इलाके और शहरों मे भी आप गये। उस वक्त के तमाम बड़े सूफी बुर्जुगों व औलिया – ए कराम से आपने मुलाकात की और फैज हासिल किया। 750 हिजरी मे हजरत हाजी निजाम यमनी सम्पादक लताइफे अशरफी आपसे मुरीद हुए जो हजरत के सफर से लेकर आखिरी दम तक आपके साथ रहे। पूर्वी शहरों की वापसी के बाद मखदूम अशरफ दोबारा पंडवा शरीफ गये और अपने पीर से आज्ञा लेकर हरमैन शरीफ का सफर दोबारा करने का इरादा किया। इसी सफर में आप अपनी खालाजाद बहन से मिले और भांजे नुरूलऐन को अपनी फरजन्दी में कबूल किया और वहॉ से हिन्दुस्तान वापसी की और तमाम सफर तय करते हुए जौनपुर होते हुए किछौछा पहुँचे। भिदूंण में ठहरे इस इलाके के मोअज्जिज व मुतमौवल रईस मलिक महमूद थे और हक पसन्दी व दरवेशी से मालामाल थे। उन्होंने मखदूम अशरफ का स्वागत किया।

मखदूम अशरफ मलिक महमूद के साथ उस जगह पहुॅचे जहॉ के लिए आपके पीर ने पेशीनगोई की थी। आपने उस पूरी जगह को देखा – भाला और कहा कि यही वह जगह है जो मेरे पीर ने मेरे लिए पसन्द की है। उस जगह जंगल था आपने उसे पटवाया साफ कराया और अपने जद के नाम पर उसका नाम रसूलपुर रखा और इसी नाम से आज भी दरगाह शरीफ जानी जाती है। खानकाह के इलाके का नाम कसरता बाद रखा और उसके चारों ओर की आबादी का नाम रूहाबाद रखा।

रौजा की तामीर :–

रौजा की मोकद्दस की तामीर आपके जीवन मे ही हुई रौजे के ऊपर एक हुजरा (कमरा) तैयार कराया और रौजे के तीन तरफ नीर शरीफ (तालाब) की खुदाई करवाई फावड़े की चोट पर कलमये लाइलाहा इल्ललल्लाह पढ़ा जाता था। 7 बार उसमें आपने आबे जमजम डलवाया। यह पानी पागल सहरजदा जादू आसेब के लिए अमृत है। मशहूर सूफी बुर्जुग अब्दुर्रहमान चिश्ती अपनी किताब मरातुल इसरार मे लिखते है कि इस हौज का पानी कभी गन्दा नही होता और इससे बीमार ठीक होते है।

A SUFI SAINT

Sufism is based on love, which they say is the eternal order of the universe. All matter is composed of invisible particles or atoms by the force of gravitation. This natural phenomenon is interpreted in Sufism as the tendency of LOVE. Since God created man in his own likeness, the man as the highest form of creation must essentially claim affinity with the divine and the absolute.

Makhdoom Sahab was so possessed of the divine idea that he practically lost all self-consciousness. His inward bent of mind prevented him from holding long discourses. He was one of those Saints whose thoughts are altogether absorbed in the contemplation of the Almighty and had no room for anything else.

वेसाल (देहान्त) :–

मखदूम अशरफ ने मोहर्रम का चॉद देखा और फरमाया यह पूर्वज का महीना अगर ये महीना मुझे मिले तो क्या बात है हजरत नूर कुतबे आलम आपके पीर के बेटे है उनकी सेहत के लिए दुआ की और उसके बाद कहा कि मेरे बेटे नुरूलऐन की उम्र लम्बी हो और सेहत हो एवं फरमाया कि मेरे अल्लाह और मेरे बीच एक हल्का सा परदा है मुनासिब है कि दोस्त, दोस्त से मिल जाये उसी वक्त से आपकी तबियत निढाल रहने लगी। 27 मोहर्रम को नमाजे फर्ज की इमामत हजरते नुरूलऐन के सुपुर्द की। 28 मुहर्रम को तबरूर्कात (प्रसाद) खिरका आदि का बक्सा हजरत नुरूलऐन को दिया और कहा कि मेरी मौत पर गम न करना। मुझे जब याद करोगे अपने पास पाओगे बाद नजामे जोहर कव्वालों को बुलाकर शेखसादी के कुछ शेर सुनाने को कहा और जब कव्वाल इस शेर को पढ़ने लगे–

सैर बीनद जमाले जान आरा
जॉ सिपारद निगारे खन्दॉ रा

तो इसी शेर पर जान अल्लाह के हवाले कर दी। यह 808 हिजरी का जमाना था।
हजरत मखदूम पाक ने अपने जीवन मे ही ये कह दिया था कि मेरे आस्ताने पर जो भी आयेगा और अपनी दीनी व दुनयावी मन्नते मॉगेगा ईन्शाह अल्लाह जरूर पूरी होगी।

उर्स मेला :–

उर्स मेला इस्लामी माह मुहर्रम की 20वीं तारीख से आरम्भ होकर 30वीं तारीख तक चलता है। मखदूम अशरफ सिमनानी ने 808 हिजरी में किछौछा में आखिरी सॉस लेते हुए इस दुनिया को आप ने अलविदा कहा। आप ने सालाना उर्स पर भव्य धार्मिक मेले का आयोजन एवं आस्तीन पर कव्वालियों का आयोजन 24 वीं मुहर्रम से लेकर 28 वीं मुहर्रम तक किया जाता है। 27 वीं मुहर्रम को सज्जादानशीन खिरका पहनकर आस्ताने पर जाते है तथा विश्वशान्ति, कल्याण, एवं राष्ट्रीय समृद्धि के लिए दुआएं करते है। कहा जाता है कि 622 वर्षो पूर्व मखदूम साहब ने यही खिरका पहना था। उर्स मेले मे केवल देश के कोने–कोने से ही नही विश्व के अनेक देशों से लोग अपनी मन्नतों को मानने के लिए आते है। यदि पूरी दुनिया मे किछौछा दरगाह शरीफ को रूहानी (आध्यात्मिक) इलाज का मरकज (केन्द्र) कहा जाता है तो गलत नही है। उर्स मेले का विशाल सैलाव जिस अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति से स्वतः नियंत्रित होता है। वह आश्चर्य कर देने वाला होता है। इसे शब्दों से वया नही किया जा सकता है। उसे सिर्फ यहॉ आकर देखा जा सकता है।

उर्स मेला की व्यवस्था नगर पंचायत अशरफपुर किछौछा अम्बेडकर नगर तथा जिला प्रशासन के समन्वय द्वारा अत्यंत सीमित संसाधनों से किया गया है। उर्स मेला मे लगभग 6–7 लाख लोगों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना नगर पंचायत की प्राथमिकता रहती है परन्तु अत्यन्त सीमित संसाधनों एवं धन के अभाव के कारण बेहतर नागरिक सुविधाओं को प्रदान न कर पाने की कसक सदैव बनी रहती है। इस ओर नगर पंचायत ने अपने कदम को प्रगतिशील करने हेतु बेहतर विकल्पों की तलास करना शुरू कर दिया है। उसी का परिणाम है कि नगर पंचायत ने मेला क्षेत्र में नागरिक सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण बेहतर जलापूर्ति, पर्यावरण, सफाई व्यवस्था तथा प्रकाश विन्दुओं के विस्तारीकरण हेतु जन सहयोग की अपील की है। मेला क्षेत्र मे चहुमुखी विकास हेतु नगर पंचायत अपने आय के साधनों को बढ़ाने का प्रयास किया है तथा आर्थिक कमी को कम करने के लिए जन सहयोग की अपेक्षा भी की जा रही है।

नीर–ए–शरीफ :–

हजरत मखदूम अशरफ के आस्ताने के तीनों ओर जो तालाब है उसे नीर–ए–शरीफ कहा जाता है। कहा जाता है कि मखदूम साहब ने पीड़ितों की सेवा के हियात में ही किछौछा दरगाह में एक तालाब की खुदाई कराकर उसमें 'सऊदी अरब ' स्थित 'आबे जम – जम से सात बार जल लाकर भरा जिसे नीर–ए–शरीफ कहा जाता है। हजरत मखदूम ने अपने देहावसान से पहले ये फरमाया था कि जो शख्स उनके समाधि स्थल पर कोई मन्नते या मुरादें लेकर आएगा वो कदापि खाली हाथ नही जाएगा। एक विख्यात कवि ने इन पंक्तियों मे हजरत की शान मे कसीदे पढ़े–

संसार के कोने–कोने से जो लेकर मनोवत आते है।
हर सिद्ध श्री मखदूम दयाकर, उनको सफल बनाते है।।

हजरत मखदूम 30 वर्षो तक दुनिया के कई देशों मे भ्रमण कर लोगों को विश्व शान्ति मानवता एवं भाईचारगी का संदेश देते रहे। तभी उनका नाम जहॉनियॉ जहॉगरत पड़ा।

खिरका :–

किछौछा दरगाह शरीफ मे सालाना उर्स के मौके पर सज्जादानशीन मखदूम साहब के जिस प्राचीन ऐतिहासिक खिरका मुबारक (झुवूवानुमा पोशाक) को पहनकर खिरका पोथी की रस्म दरगाह के परम्परा के अनुसार अदा करते है। इसका इतिहास वर्षो पुराना है। जिसे सूफी संत मखदूम साहब ने अपने जीवन काल मे बादशाहत को ढ़ोकर फकीरी अपनाने के पश्चात् स्वयं पहना था और विश्व भ्रमण पर निकले थे।

सूफी फकीर हजरत मखदूम अशरफ को तोहफा व उपहार के रूप में दिया गया। यह खिरका–ए–मुबारक सूफी संत निजामुद्दीन औलिया से होता हुआ हजरत ख्वाजा अरबी सेराजुल हकवद्दीन तक पहुॅचा। इस सूफी बुर्जुग ने यह खिरका उस जमाने के मशहूर संत अलाउल हक पंडवी (पश्चिम बंगाल) को सुपुर्द कर दिया।

अंत मे गुरू पंडवी ने अपने शिष्य मखदूम साहब के हवाले कर दिया। ऐसा माना जाता है कि इस खिरके के सीने वाले हिस्से मे इस्लाम धर्म के आखिरी पैगम्बर मुहम्मद साहब की बेटी हजरत फातिमा के चादर मुबारक का टुकड़ा लगा हुआ है। यह खिरका मुबारक इतिहास के सुनहरे पन्नों मे कई विशेषताओं एवं खूबियों से लवरेज है। यही कारण है कि किछौछा के वार्षिक उर्स मेले मे इसके झलक का दीदार करने के लिए पूरे देश से लाखों की संख्या मे श्रद्धालु उमड़ पड़ते है। इसी दिव्य ऐतिहासिक खिरके को सज्जादानशीन मुहर्रम की 27वीं तारीख को पहनकर आस्ताने पर आते है तथा दुवाएं करते है। उर्स मेला का प्रमुख आकर्षण केन्द्र खिरका होता है।

मखदूम अशरफ सिमनानी की तसनीफ (लेखन) :– आपने अपने पूरी दुनिया के सफर मे बहुत सी अहम किताबें लिखी उनमें कुछ के नाम जो मिल सके वो यह हैः–

1 – रिसाला गौसिया
2 – रिसाला मनाकिब असहाबे कामिलीन व मरातिबे–ए– राशिदीन
3 – बशारतुल इख्वान
4 – इशादुल इख्वान
5 – फवाइदुल अशरफ
6 – अशरफुल फवायद
7 – रिसाला बहस वहदतुल वजूद
8 – तहकीकाते इश्क
9 – मक्तूबाबे अशरफी
10 – अशरफुल अन्साब
11 – मनाकिबुस्सादात
12 – फतावा अशरफी
13 – दीवाने अशरफी
14 – रिसाला तसव्वुफ व अख्लाक (उर्दू मे)
15 – रिसाला हुज्जतुज्जाकिरीन
16 – बशारतुल मुरीदीन रिसाला कबरिया

यही नही आप उर्दू जुबान के हिन्दुस्तान के पहले नसर निगार (गद्य लेखक) भी कहे जाते है।

सज्जादा नशीनी (गद्दी) :–

आपने अपने जीवन में ही अपने भांजे हजरते नुरूलऐन को अपना जानाशीन (उत्तराधिकारी) बना दिया था। हजरते नुरूलऐन ने आपके बाद 40 साल तक सज्जादगी की और 120 साल की उम्र मे उनका देहान्त हुआ। हजरते नुरूलऐन के चार बेटे थे देहान्त के समय अपने चारों बेटों को बुलाआ और सबके लिए दुआ की अपने तीसरे बेटे मीर सैय्यद हुसैन को बुलाकर जो कुछ उन्हें मखदूम अशरफ से मिला था। उन्हें दिया और कहा कि मेरा हुसैन ही इस दरगाह का सज्जादा नाशीन होगा। तौलियत वो सज्जादगी देने के बाद कहा कि मेरे हुसैन से जो औलादें पैंदा होगीं। उस खानदान में सूफी व बुर्जुग पैदा होगे और तब से आज तक यही सिलसिला चला आ रहा है। सैय्यद शाह हुसैन की औलाद ही दरगाह मखदूम अशरफ के सज्जादा नशीन होते आये है।

दो शब्द

हिन्दुस्तान के कस्बा रसूलपुर रूहाबाद किछौछा, जिला– अम्बेडकर नगर उत्तर–प्रदेश की दरगाह मखदूम अशरफ सिमनानी की मशहूर दरगाह है। जिसकी पूरी दुनिया में ख्याति है जिसकी शानोशौकत आन–बान व खूबी देखने से पता चलती है। ये दरगाह मखदूम अशरफ सिमनानी से जुड़ी हुई है।जिसके फैजे रूहानी से हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया जगमगा रही है।

आसेब जदा वर्स (कोढ़) के मरीज, जादू सहर हो कि जिस्मानी परेशानी में हो आपके दर पर हर व्यक्ति आकर माथा टेकते हैं और कामयाब होकर जाते है। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, अच्छे–बुरे हर जाति के लोग, हर बिरादरी के, हर शहर व मुल्कों यूरोप, अफ्रीका व खाड़ी देशों के लोग आपके अस्ताने पर आते है और फैज पाते है। ऐसी अजीम दरगाह जहॉ पर रोज 15 हजार आदमी मौजूद रहता है। कुछ तो है जो उन्हें यहॉ खीच कर लाता है। जो भी इस दरगाह पर आया है खाली हाथ नहीं लौटा।

नगर पंचायत अशरफपुर किछौछा ने अपने वार्ड नम्बर– 9 मखदूम नगर अर्न्तगत स्थित विश्व प्रसिद्ध दरगाह जिसे पूरी दुनिया मे रूहानी (आध्यात्मिक) इलाज का मरकज (केन्द्र) कहा जाता है, को सूचना प्रौद्यौगिकी के माध्यम (वेवसाइट) से वैश्विक पटल पर लाने की प्रथम वार कोशिश की है।जिससे कि इस रूहानी शक्ति के बारे मे आमजन को प्रौद्यौगिकी के माध्यम से अधिकतम जानकारी हो सके और लोग अपनी–अपनी आस्थाओं के साथ मखदूम अशरफ सिमनानी के बारे मे सूचना प्रौद्यौगिक के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सके। हमारी दीर्घकालीन सोच है कि नगर पंचायत मे स्थित विश्व प्रसिद्ध दरगाह को न केवल पर्यटन की सूची मे दर्शित किया जाय अपितु वास्तविक रूप में दरगाह किछौछा शरीफ को पर्यटन स्थल के रूप मे पहचान मिले। हम लोगों ने यह संकल्प लिया है कि हम लोग सूचना प्रौद्योगिक के माध्यम से यहॉ के अध्यात्मिक शक्ति एवं मान्यताओं से अधिक लोगो को अवगत करायें एवं पर्यटक स्थल के रूप में विकसित कर समृद्धि की ओर प्रगतिशील रहे।

नगर पंचायत ने समावेशी विकास के लिए तथा मेला क्षेत्र मे नागरिक सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण के साथ दरगाह किछौछा शरीफ के सौन्दर्यीकरण के लिए जन–सामान्य से सहयोग की अपेक्षा की है। इसीलिए नगर पंचायत द्वारा एक खाता (मखदूम अशरफ सिमनानी) के नाम से भारतीय स्टेट बैंक बसखारी– अम्बेडकर नगर जिसका **खाता नं0–30441477568** खुलवाया है। कोई व्यक्ति मेला क्षेत्र के विकास एवं सौन्दर्यीकरण हेतु धनराशि कही से भी इस खाते मे भेज सकता है।